on the border areas so that if we want to do some publicity and propaganda that could be heard and seen in Pakistan and Bangladesh ?

SHRI H.K.L. BHAGAT : Sir, normally the ethics of publicity and putting TV transmitters is that it is meant for coverage of one's own country. Some of their programmes are seen in our areas and some of our TV programmes are seen in their areas. We certainly want to cover our border areas as much effectively as possible so that our people can get the coverage. In some cases we have put the transmitters and certain other proposals are under consideration.

MR. SPEAKER : Question No. 124— Shri Vajpayee.

PROF. K.K. TEWARY : Sir, this question should not have been allowed. I do not know how you have allowed this question. You please go through this question. I do not know how it was admitted by your Searetariat. (*Interruptions*)

Control over A.I.R. and T.V.

+

*124. SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE
SHRI SURAJ BHAN :

Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state :

(a) whether his attention has been drawn to an analysis of A.I.R. broadcasts published in the Times of India, dated June 3 last, showing how Government control over Radio and T.V. is one of the major threats to the fairness of elections, if so, the details of this analysis; and

(b) whether it is a fact that Andhra Pradesh Chief Minister, Shri N.T. Rama Rao's name was first mentioned by the A.I.R. only when the Andhra Pradesh Assembly election results were out and was never mentioned before during the election campaign; if so, what were the guidelines in the regard ?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING AND MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI H.K.L. BHAGAT) : (a) and (b) A Statement is laid on the Table of the Sabha.

Statatement

Government have seen the news item published in the Times of India of Delhi on 3rd June, 1984. Government do not agree with the analysis and the conclusions in that news item. AIR and Doordarshan have been providinig due coverage to Opposition Parties and their leaders in the news. Besides, a scheme of election broadcasts approved by the Election Commission and the political parties for broadcast over AIR Stations/Doordarshan Kendras, has been in vogue from 1977. Under this scheme, various recognised political parties are afforded the facility of broadcasting over AIR Stations/Doordarshan Kendras before elections to the Lok Sabha/State Assemblies.

2. It is not correct that the name of Shri N.T. Rama Rao, Chief Minister of Andhra Pradesh was not mentioned at all by AIR during the election compaign. His name was duly mentioned in the 2100 hours bulletin on 11th and 15th December, 1982. The Telugu Desam party had similarly been noticed in such bulletins broadcast on 10th December, 1982 and 4th January, 1983. Moreover, AIR's regional news bulletins broadcast from AIR Hyderabad and AIR Vijayawada had devoted 123 lines in the news bulletins to Shri N.T. Rama Rao and 204 lines to the Telugu Desam Party in the news broadcasts from 1.12.1982 to 7.1.1983.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, इस सवाल पर मैं पूरक प्रश्न पूछने से पहले, मंत्री महोदय ने जो उत्तर दिया है, उसके बारे में एक स्पष्टीकरण चाहता हूं, जो कि पूरक प्रश्न में नहीं आया है। मंत्री महोदय ने उत्तर दिया है···

अध्यक्ष महोदय : यह क्वैश्चन की कौन सी कैटेगरी है ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह क्लैरिफिकेशन है। इसकी सफाई हो जाए तो उस पर सवाल पूछा जाए।

मंत्री महोदय ने जो बयान दिया है उसमें कहा है कि "यह सही नहीं है कि चुनाव अभियान के दौरान आकाशवाणी के द्वारा आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री एन० टी० रामाराव के नाम का उल्लेख बिल्कुल नहीं किया गया था। 11 और 15 दिसम्बर, 1982 के रात 9-00 बजे के बुलेटिन में उनके नाम का विधिवत् उल्लेख किया गया था।"

यह विधिवत् उल्लेख क्या होता है? इसी तरह से अंग्रेजी में है :

His name was duly mentioned.

यह ड्यूली मेंशन्ड का क्या मतलब है?

सवाल यह किया गया था कि जब चुनाव आंध्र में हो रहा था तो चुनाव के दौरान रात को 9 बजे जो मुख्य बुलेटिन होता है, उसमें तेलगू देशम और कांग्रेस का मुख्य मुकाबला था लेकिन तेलुगु देशम के नेता श्री एन० टी० रामाराव के किसी भी भाषण को 9 बजे के बुलेटिन में नही दिया गया। मंत्री जी कह रहे हैं कि उनके नाम का उल्लेख किया गया था। हो सकता है किसी कांग्रेस के नेता ने उनकी आलोचना करते हुए उनका नाम लिया हो तो क्या उस उल्लेख को विधिवत् उल्लेख माना जायेगा? इसलिए पहले यह स्पष्ट करदें कि ड्यूली मेंशन्ड का क्या मतलब है?

श्री एच० के० एल० भगत : मैं यह कहना चाहता हूं कि उनके नाम का जिक्र किया गया लेकिन क्या कहा गया क्या नहीं कहा गया उसकी डिटेल मेरे पास नहीं है। आनरेबल मेम्बर चाहेंगे तो दे दूंगा। (**व्यवधान**) एक बात मैं और साफ की है वह सही नहीं है, गलत है—अभी-अभी मैं आपके सामने फैक्ट्स ऐंड फीगर्स भी रखूंगा।... (**व्यवधान**) उनका नाम उन दो बुलेटिंस में आया लेकिन कैसे मेंशन किया गया, क्या कहा गया इसकी डिटेल्स मेरे पास नहीं हैं, वह बाद में दे सकता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : ड्यूली मेंशन्ड का क्या मतलब है?

श्री एच० के० एल० भगत : ड्यूली मेंशन्ड के मायने सीधे-सीधे यह हैं कि ठीक तरह से मेंशन किया गया जैसा कि करना चाहिए था।

(**व्यवधान**)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप तथ्य को छिपा रहे हैं।

श्री एच० के० एल० भगत : मैं कुछ नहीं छिपा रहा हूं। (**व्यवधान**)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप तैयार होकर क्यों नहीं आए।

श्री एच० के० एल० भगत : मैं कोई चीज छिपा नहीं रहा हूं। (**व्यवधान**)

श्री मनीराम बागड़ी : जानकारी में नहीं है या जानकर छिपा रहे हैं?

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने कह दिया कि जो जानकारी में है वह बता दिया फिर छिपाने की आवश्यकता ही नहीं है।

(**व्यवधान**)

श्री मनीराम बागड़ी : किसी एक के बाप दादे की जायदाद है क्या? अगर आएगा तो सभी का आएगा। (**व्यवधान**)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष

का और आडवाणी जी ने जो विश्लेषण किया है उससे जो तथ्य सामने आए हैं वह बड़े चौंकाने वाले हैं लेकिन मंत्री महोदय उन तथ्यों को चुनौती दे रहें हैं। उन तथ्यों के अनुसार 15 दिसम्बर, 1982 से लेकर 7 जनवरी, 1983 तक आंध्र प्रदेश में चुनाव अभियान चल रहा था, तो रात नौ बजे मुख्य बुलिटिन में प्रधान मंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, को 243 लाइनें दी गई, जिनमें से 133 लाइनें उनके पोल-कम्पैन से सम्बन्धित थी। इसकी तुलना में मोरारजी भाई को 6.5 लइनें, बाबू जगजीवन राम जी को 9.5 लाइनें, रामाराव जी के भाषण का उल्लेख नहीं था और मुझे 7.5 या 8.5 लाइनें मिली हैं।···(**व्यवधान**)···क्या आल इंडिया रेडियो एक तरफा प्रचार के लिए है? क्या इस सम्बन्ध में कोई गाइड लाइन्स दिए गए हैं? चुनाव के दौरान आल इंडिया रेडिया, टेलिविजन किस तरह से व्यवहार करेंगे, क्या वह सरकारी पार्टी के प्रचार का साधन बनेंगे? मैं सूचना और प्रसारण मंत्री से पूछना चाहता हूं कि वे इन तथ्यों को चुनौती दे रहे हैं? मैं भविष्य के बारे में भी जानना चाहता हूं कि आल इंडिया रेडियो और टेलिविजन की आपको विश्वसनीयता कायम करनी है या नहीं करनी है? इस सम्बन्ध में आप क्या निर्देश दे रहे हैं और अभी तक आपने क्या निर्देश दिए हैं?

श्री एच० के० एल० भगत: अध्यक्ष जी, असल बात यह है, मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को बड़े स्नेह और आदर्श से बताना चाहता हूं कि उनके पास जो श्री आडवाणी जी का विश्लेषण है, वह बिल्कुल गलत है। मैं आपको फैक्ट्स बता रहा हूं। बल्कि आपके पास जो प्राइम मिनिस्टर के बारे में इन्फार्मेशन है, वह सही नहीं है और दूसरी भी सही नहीं है। मैं आपको हिसाब से फैक्ट्स बता रहा हूं। आपने कम बताए हैं, मैं आपको ज्यादा बता रहा हूं। प्राइम मिनिस्टर को 517 लाइनें दी गई, उसमें 213 लाइनें पार्टी मैसर्स के लिए दी गई। उसके बाद आडवाणी जी ने कहा बी०जे०पी० को 80 लाइनें दी गई, जबकि 110 लाइनें दी गई। ···(**व्यवधान**)···लोकदल को उन्होंने कहा 52 लाइनें दी गई, जबकि 56.5 लाइनें दी गई, जनता पार्टी को 27 लाइनें, जबकि 37 लाइनें दी गई, सी० पी० आई० (एम०) को 22.5 लाइनें, जबकि 25.5 लाइनें दी गई, सी० पी० आई० को 10.5 लाइनें, जबकि 14.5 लाइनें दी गई, कलकत्ता कन्कलेव को 106.5 लाइनें, जबकि 95.5 लाइनें दी गई और दूसरी पार्टीज जिनको आप पार्टी नहीं मानते हैं, दूसरी रीजनल पार्टीज, जिनको आडवाणी जी ने जानबूझकर नहीं गिना होगा या कैसे नहीं गिना, इस तरह से कुल मिलाकर 298.5 लाइनें और टोटल 501.5 लाइनें सारे अपोजीशन ग्रुप्स को दी गई ···(**व्यवधान**)···बिल्कुल सही बात है, जरा जवाब सुनिए···(**व्यवधान**)···प्राइम मिनिस्टर और पार्टी मैटर्स को सारी लाइनें मिलाकर 630 लाइनें कांग्रेस को दी गई। मुझे अफसोस है···(**व्यवधान**)···विरोधी दल को 501 और कांग्रेस को 630 लाइनें दी गई, यह आल इंडिया रेडियो की मेरे पास इन्फार्मेशन है।

(**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय: मेरे लिए तो आप भी आनरेबिल मेम्बर हैं और वह भी आनरेबिल मेम्बर हैं।

(**व्यवधान**)

श्री एच० के० एल० भगत: मुझे अफसोस है, आडवाणी जी जिम्मेदार सदस्य हैं और इनकी पार्टी के नेता हैं। सूचना और प्रसारण मंत्री भी रहे हैं···(**व्यवधान**)···इस हाउस में मैं दुःख व्यक्त करना चाहता हूं कि श्री एच० के० आडवाणी

इस देश के पुराने सूचना और प्रसारण मंत्री रहे हैं। राज्य सभा के सदस्य हैं, जिम्मेदार नेता हैं। उनको यह अधिकार था कि यदि उनको कोई इन्फार्मेशन चाहिए, तो मुझ से इन्फार्मेशन मांगते, मैं उनको सही इन्फार्मेशन देता मैं नहीं जानता···(**व्यवधान**)···

श्री राम विलास पासवान : अध्यक्ष जी, लाइब्रेरी में बुलिटिन रखा रहता है। आपसे इन्फामेशन लेने की जरूरत नहीं है।

(**व्यवधान**)

श्री एच० के० एल० भगत : मुझे नहीं पता कि उन्होंने किन सूत्रों से इन्फार्मेशन ली है। अगर उन्होंने ए० आई० आर० में अपने छुपे हुए चेलों से ली है, तो उन्होंने यह गलत काम किया है। मैं उसकी शिकायत करना चाहता हूं, उनकी इन्फार्मेशन गलत है। आल इंडिया रेडियो का स्टेटमेंट मेरे पास मौजूद है। दूसरी बात वाजपेयी जी ने चुनाव की बात की, मेरे पास और तथ्य है, सारी पोलिटिकल पार्टीज की नेशनल कन्वेंशन को कवर किया गया है। वन-मैन पार्टी की भी कवर की गई हैं।···(**व्यवधान**)···

दूसरी बात मैं यह कहूंगा—रेडियो और टी० वी० की क्रैडिबिलिटी है, लेकिन आप उसकी क्रैडिबिलिटी नहीं चाहते हैं, उसकी क्रैडिबिलिटी से डरते हैं। मेरा कहना यह है कि जो गाइड-लाइन्ज उस जमाने में थी, उसी के मुताबिक काम हो रहा है। चुनाव के मामले में जो कार्यवाही की गई, वह सही की गई है, आइन्दा भी सही की जाएगी। रेडियो एण्ड टी०वी० का कोई एक-तरफा सवाल नहीं है, पार्टीज के लिए कोई टाइम फिक्सड नहीं है।

एक बात मैं तेलगू-देसम के बारे में साफ करना चाहता हूं। आपने नेशनल बुलेटिन की बात है—तेलगू देसम रिकगनाइज्ड पार्टी नहीं थी, लेकिन उसके बावजूद भी मैं चाहता हूं कि सत्य सबके सामने आना चाहिए···

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : 9 बजे बुलेटिन की बात करो।

श्री एच० के० एल० भगत : आपने जैनरल सवाल किया है, दूसरे से क्यों जोड़ते हैं?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आपने सवेरे 6 बजे के बुलेटिन का नाम ले लिया, यह काफी नहीं हैं। 9 बजे का मेन बुलेटिन है।

श्री एच० के० एल० भगत : हैदराबाद और विजयवाड़ा स्टेशनों से 1 दिसम्बर, 1982 से लेकर 7.1.1983 तक तेलगु देसम को 204 लाइनें, श्री एन० टी० रामाराव को 132 लाइनें दी गई। इसलिए वाजपेयी जी की सारी एलीगेशन, और आडवाणी जी की एन्कवायरी फाल्ज, रांग और पोलिटीकली-मोटिवेटेड हैं। ये गलत इल्जाम हैं जो रेडियो और टी०वी० पर लगाए गए हैं।

श्री हरीश कुमार गंगवार : भगत जी हैं, फिर भी तैश में आ रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष जी, श्री आडवाणी ने जो विश्लेषण किया था, वह 3 जून के अखबारों में छपा था, उसी के आधार पर मैंने सवाल बनाया। मंत्री महोदय और सूचना मंत्रालय ने अधिकृत रूप से उसका खण्डन नहीं किया था। आज वे उन तथ्यों को चुनौती दे रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, इन तथ्यों का निर्णय कैसे होगा? आप इसे किसी पार्लियामेन्ट्री कमेटी को सौंप दीजिए···

(**व्यवधान**)

The records cannot be changed. How do you put the facts ?

PROF. MADHU DANDAVATE : They are all available in the library.

MR. SPEAKER : One thing is there. I do not want to mediate in this.

(*Interruptions*)

MR. SPEAKER : Order please.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या मन्त्री महोदय कह सकते हैं कि 9 बजे के बुलेटिन के बारे में जो मैंने कहा है, वह गलत है ?

श्री एच० के० एल० भगत : गलत है। 9 बजे के बुलेटिन के बारे में आपने जो कहा है, आपके तथ्य गलत हैं।

(व्यवधान)

श्री हरीश कुमार गंगवार : इसकी जांच करवायें।

अध्यक्ष महोदय : मैं जांच करवा लेता हूं।

(व्यवधान)

भगत जी, क्या आप कुछ और कहना चाहते हैं ?

श्री एच० के० एल० भगत : मैं एक बात और कहना चाहता हूं—मैंने जो बातें कहीं हैं, वे तथ्य के आधार पर हैं। वाजपेयी जी ने अभी कहा कि इसको कन्ट्राडिक्ट नहीं किया गया। मैं सब चीजों को जमा करवा रहा था और सोचा था कि जमा करवा कर कन्ट्राडिक्ट करूंगा, लेकिन यह अच्छा हुआ कि आपने मुझे हाउस में कन्ट्राडिक्ट करने का मौका दे दिया। हाउस में ही कन्ट्राडिक्ट हो गया। ये तथ्य जो मैंने बतलाएं हैं आल इंडिया रेडियो की स्टडी के आधार पर बतलाए हैं ?

एक बात और कहना चाहता हूं—आपने मुझे प्रोवोक करने की बहुत कोशिश की है, लेकिन मैं प्रोवोक होना नहीं चाहता हूं—अगर मीडिया का कोई ग्रेवेस्ट-मिसयूज हुआ है तो डार्केस्ट ईयर फायर रेडियो एण्ड टी० वी० उस समय था जब श्रीमती इन्दिरा गांधी के खिलाफ कैम्पेन चलया, दिन-रात (tons false of allegations)** एल्जाम लगाए जाते थे···(**व्यवधान**)···कोई एफ० आइ० आर० दर्ज नहीं हुई कोई इलजाम साबित नहीं हो सका,** इल्जाम लगाए गए···उस समय आडवाणी जी मन्त्री थे।

(व्यवधान)

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : क्या मिनिस्टर को ऐसे जवाब देना चाहिए ?

श्री एच० के० एल० भगत : क्यों नहीं देना चाहिए, आप कुछ भी कहते रहें ?

SHRI RATANSINH RAJDA : There are certain norms as to how a Minister should reply. He is very much agitated and he is getting very emotional.

अध्यक्ष महोदय : आप तो जोर से बोलते ही रहते हैं, आज उन्होंने जोर से बोल दिया।

श्री मनी राम बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, वातावरण को ठीक कीजिए। मन्त्री जी ने "फाल्ज" शब्द का इस्तेमाल किया है—आडवाणी जी के लिए···

श्री एच० के० एल० भगत : फाइल्ज के बजाय इन-करैक्ट कह लीजिए।

श्री मनीराम बागड़ी : मन्त्री जो को अगर कोई ऐसा कहे, तो कैसा लगेगा ?

अध्यक्ष महोदय : जो अन-पार्लियामेन्ट्री बात होगी, वह रिकार्ड पर नहीं जाएगी।

**Expunged as ordered by the Chair.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मन्त्री जी ने जनता सरकार पर जो आरोप लगाया है, वह निराधार है···

श्री एच० के० एल० भगत : 100 परसेन्ट सही है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जनता सरकार में पहली दफा राजनैतिक दलों को रेडियो और टी० वी० का उपयोग करने की सुविधा दी गई थी।

श्री एच० के० एल० भगत : वह सुविधा जारी रहेगी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : रेडियो और टेलीविजन के खिलाफ मैं शिकायत नहीं कर रहा हूं, इलेक्शन कमीशन के पास भी शिकायतें पहुंची हैं । इलेक्शन कमीशन की मेरे पास एक चिट्ठी है 14 मई, 1984 की और इलेक्शन कमीशन जो कहता है, वह मैं कोट करना चाहता हूं :

> "...In the course of the discussions, the Chief Election Commissioner raised the point that in the past, on the eve of the general elections to Lok Sabha and certain Legislative Assemblies, a large number of complaints about misuse of AIR/ Doordarshan and DAVP were received. Most of the complants relaited to...

Sir, this is important...

> "...(i) wider coverage of election activities of the party in power; (ii) very little or no coverage of the views and activities of Opposition parties; (iii) misuse of DAVP in printing, publicising activities of the Government in a manner as to give advantage to the party in power; and (iv) misuse of these media, AIR/ Doordarshan in furtherance of election prospects of the party in power.

MR. SPEAKER : These are complaints This is not the version of the Election Commission.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इन शिकायतों को दूर करने के लिए एक सुझाव दिया गया था कि चुनाव के दौरात एक मानीटरिंग सेल बनाया जाए जो यह देखे कि रेडियो और टेलीविजन का मिसयूज तो नहीं हो रहा है और प्रजातंत्र में संतुलन बनाया जा रहा है । मैं यह जानना चाहता हूं कि मानीटरिंग सेल बनाने के प्रस्ताव का विरोध क्यों किया गया ?

PROF. K.K. TEWARY : They were baseless. Sir, has he taken your permission to level these charges ?

MR. SPEAKER : These are not charges, Mr. Tewary. They are not substantiated. They are only complaints. Anybody can make complants.

(*Interruptions*)

MR. SPEAKER : Anybody can make complaints.

श्री एच० के० एल० भगत : पहली बात तो मैं यह कहना चाहता हूं कि जैसा कि आपने भी कहा है कि इलेक्शन कमीशन के सामने कम्पलेंट्स की गई, यह इनका कहना है । दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि ये कम्पलेंट्स सही नहीं हैं और तीसरे यह भी कहना चाहता हूं कि मुझे आए डेढ़ साल हो गए हैं इस महक में और बंगाल के बारे में सी० पी० आई० (एम) के लोगों ने जो कम्पलेंट्स की थीं, उनका जवाब मैंने दे दिया था । इसके अलावा मेरे लोक सभा में कहने के बावजूद भी वाजपेयी जी कोई स्पेसीफिक कम्पलेंट नहीं दे पाए, ऐसी मेरे पास रिपोर्ट है और जहां तक मानीटरिंग सेल का ताल्लुक है, उसकी कोई जरूरत मैं नहीं समझता हूं । वह बिल्कुल एक पालीटीकली मोटीवेटेड चीज है ।

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : मैंने कोई कम्पलेंट्स की थी ।

श्री अटल विहारी वाजपेयी : शास्त्री जी कह रहे हैं कि उन्होंने शिकायतें की थी।

(व्यवधान)

श्री एच० के० एल० भगत : इन्होंने हाऊस में कहा था कि श्री राम विलास पासवान का नाम ले लिया गया लेकिन मेरा नहीं लिया।

(व्यवधान)

श्री रामावतार शास्त्री : मैंने कहा था कि निष्पक्षता के साथ तमाम लोगों का होना चाहिए। आप गलत क्यों बोलते हैं।

MR. SPEAKER : No questions in between.

श्री सूरज भान : अध्यक्ष महोदय, मन्त्री जी ने अपने जवाब में शुरू में कहा है :

> "Government do not agree with the analysis."

और आगे जो आंकड़े दिए, इन्होंने कहा कि आप की बात ठीक है। मैं साबित कर रहा हूं कि आडवाणी जी ने···

अध्यक्ष महोदय : इन्होंने बता तो दिया है।

श्री सूरज भान : इन्होंने कहा है कि आडवाणी जी ने जो कुछ कहा है, वह गलत कहा है।

श्री अध्यक्ष महोदय : दूसरे आंकड़े दे तो दिए हैं।

श्री सूरज भान : इन्हीं के जवाब से मैं साबित कर रहा हूं कि इन्होंने कहा है कि आंकड़े ठीक दिए हैं। आडवाणी जी ने 16 दिसम्बर, 1982 से 3 जनवरी, 1983 तक के आंकड़े दिए हैं और इन्होंने जिक्र किया है 11 दिसम्बर और 15 दिसम्बर का। इन्होंने कहां का जिक्र किया, कुछ पता नहीं है। एन० टी० रामाराव की स्पीच रिपोर्ट हुई या नहीं, वह बाद में बताएंगे, उसके बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। यह तो उन्होंने खुद भी मान लिया है। 16 दिसम्बर और 3 जनवरी के बीच के जो आंकड़े आडवाणी जी ने दिए हैं वे बिल्कुल ठीक हैं जैसा कि आपके जवाब में है। अब एक चीज में उनसे कहना चाहता हूं कि आल इंडिया रेडियो और टी० वी० जैसे मीडिया का इन्फार्मेशन देना, एजूकेट करना और एन्टरटेनमेन्ट करना मकसद है लेकिन बदकिस्मती से इसे पार्टी प्रोपेगण्डे के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। अभी मंत्री जी ने कहा कि वे मोनिटरिंग सेल की जरूरत नहीं समझते हैं। कल के ट्रिब्यून में छपा है कि चीफ इलेक्शन कमिशनर ने 7 रिकगनाइज्ड पार्टीज की 25 अगस्त को मीटिंग बुलाई है। क्या आप उस मीटिंग के पहले ऐसा बयान देकर चीफ इलेक्शन कमिश्नर को कन्वीस करना चाहते हैं और यह कहना चाहते हैं कि जो वह करना चाहते हैं उसे रद्द कर दिया जाए ? चीफ इलेक्शन कमिशनर ने मीडिया के लिए मोनिटरिंग सेल बनाने के लिए एक मीटिंग बुलाई है, क्या आप पसन्द करेंगे और आप उसके रास्ते में रोड़ा तो नहीं अटकायेंगे ?

श्री एच० के० एल० भगत : यह सारा हाइपोथेटिकल क्वेश्चन है। हमने अपनी राय इलेक्शन कमिश्नर को दे दी है। जो आडवाणी जी ने सजेशन दिया था उसके बारे में हमारे कमेन्ट्स मांगे गए थे वे हमने दे दिए हैं कि मानिटरिंग सेल की कोई जरूरत नहीं है। हमारी ओपिनियन के आगे चीफ इलेक्शन कमिश्नर चाहेंगे तो जब बात होगी तब देखा जाएगा।

PROF K.K. TEWARY : Of course, mass media should be used to disseminate information, entertainment and instructions. Were any set of guidelines avaialable during 1977-1979 when Mr. Advani was the Minister of Information & Broadcasting ? Would the Minister agree to put before the House a comparative study of the

misuse of mass media during this period that I have mentioned especially launching personal attacks against Mrs. Gandhi and then the complaint of the so-called misuse of mass media since 1980? Would the Minister also agree to have before the House a complete picture of how Mrs. Gandhi was made the target of attack day-in-and-day-out through radio and T.V. during Janata Party regime and what has been the performance of mass media since 1980? The Janata Party people themselves lodged a complaint that the AIR and Doordarshan have become a sanctuary of the RSS activists; and whether they are still continuing at important places in AIR and Doordarshan; if so, what steps the Minister proposes to take in order to eradicate this evil of infiltration at the hands of the RSS activists and such other dubious elements?

PROF. MADHU DANDAVATE : This question might be asked in January when we will come to power.

SHRI H.K.L. BHAGAT : I have already pointed out that the darkest year for the radio and T. V. was when—if a person has to make some allegations, first the FIR is to be registered; without registration of FIR, tonnes of false allegations were made on the radio and TV against Mrs. Gandhi and several others; and that was a very great misuse of media. As far as going into that question is concerned, I have already said, I do not wish to dig the dead; already they are dead; I do not wish to dig them again. Secondly; I have got this impression given by a number of people that there are, as I said, some *chelas* of Mr. Vajpayee's Party in the Ministry. I do not want to tread on those lines. I want every one to work according to the guidelines.

(*Interruptions*)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : This language is not befitting the Minister. I am not a God man. I do not keep *chelas*. This should be expunged. I am a party man. I have friends, colleagues and comrades. but not *chelas*. अध्यक्ष महोदय, यह चेला वाला मामला जो है वह ठीक नहीं है। वैसे चेले भी हैं और चांटें भी हैं।

अध्यक्ष महोदय : चमचे भी हैं, कर्छी भी हैं।

Review of Policy Decisions to Increas Production of Drug Formulations

+

*125. SHRI AMAL DATTA : SHRIMATI SUSEELA GOPALAN :

Will the Minister of CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to state :

(a) whether the present drugs and pharmaceuticals policy decisions of Government enabled erstwhile FERA companies to increase their production of formulations and remit larger amounts of foreign exchange to their parent companies;

(b) if so, whether Government propose to review the said policy;

(c) if so, by what time; and

(d) if not, the reasons thereof ?

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI VASANT SATHE) : (a) to (d) Under the existing provisions of the Industrial Licensing Policy and the 1978 Drug Policy, a company with direct foreign equity of 40% or below is treated as an Indian company. Such companies are allowed formulation licences upto 10 times the value of their bulk drug production. Some representations were received that ex-FERA companies should not be treated as Indian companies. All aspects of the present Drug Policy including above aspect are under review presently in the context of the examination of the existing policy and as a first step the National Drugs and Pharmaceuticals Development Council has been entrusted with the responsibility of formulating its recommendations.

SHRI AMAL DATTA : The answer is evasive and that is why parts (a) to (d) have been clubbed together. The main question is whether FERA companies have been allowed to increase their production, and it has been only indirectly answered by saying that some companies are being treated as Indian companies. The question is since when a FERA company in the drug